"कोमल है कमजोर नहीं तू"

नारी

संस्कृतियों की संवाहक तू, संस्कारों की पोषक है
परिवारों का रूप तुझी से, परम्परा की द्योतक है
आदिशक्ति तू मीरा पन्ना, तू झांसी की रानी है
राम सहचरी सीता तू है, कान्हा की दीवानी है

जब विपदा देवों पर आई, तूने काली रूप धरा
तुझसे है श्रृंगार मनुज का, तू ही तो है स्वर्ण खरा
माँ बनकर तूने ममता का, अनुपम है उपहार दिया
पुरूष धरा थी बंजर जैसी, तूने उसको हरा किया

हमने सीता – राम कहा है, हमने राधा – श्याम कहा
गौरी – शंकर लिखकर सबने, पहले तेरा नाम कहा
माना पुरूष अधिक बलशाली, तुम बिन मगर अधूरा है
हवन अधूरा, यज्ञ अधूरा, घर परिवार अधूरा है

अहंकार वश इस समाज में, उत्पीड़न का दौर चला
नारी ही नारी पर टूटी, सास ननद बन कोई बला
धन दौलत के लालच ने फिर, तेरा गला दबाया है
दहेज दंश के दाढ़–दाँत ने, तेरा सत्व चबाया है

बहुत रखा तुझको पिंजरे में, दहलीज की सीमा में
बहुत तुझे कमजोर बताया, किस्सों और सिनेमा में
अपनी प्रतिभा के दम पर तू, बनी कल्पना, इंदिरा है
बनी सुनिता, पी.टी. ऊषा, जग में नाम उकेरा है

जब ऐसा बदलाव हुआ है, सब में इक अनुराग उठा
प्रबल हुई बेटी की चाहत, राग भैरवी जाग उठा
जाग उठा अब नया सवेरा, रूकने वाली भोर नहीं
प्रबल प्रेम का धागा है तू, कोमल है कमजोर नहीं

प्रेषक –
नाम – मधु मोदी
बी–293, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)
दक्षिणी राजस्थान प्रदेश

H

।। कोमल है कमज़ोर नहीं तू ।।

कोमल है, कमजोर नहीं तू, यही तेरी पहचान है ,
सेवा, त्याग, समर्पण कर, दिया तूने बलिदान है ।
जब-जब भी निज जन पर, संकट तूने पाया है,
सबकुछ अपना अर्पण कर, तूने ही पार लगाया है ।

तुझमें भक्ती, तुझमें शक्ति, तू वात्सल्य का भंडार है,
चट्टानों सी अडिग, अटल तू, तू रानी की तलवार है ।

संकल्प और साहस का दर्पण, जग को तूने दिखलाया है,
दिव्य प्रेम की झलक दिखा, ममत्व को अमृततुल्य बनाया है।
संस्कारों का दिव्य दर्शन, इतिहासों में भी दर्शाया है,
सभ्यता की पूंजी संजोये, ब्रम्हाण्ड को नमन कराया है ।
नैतिक मूल्यों का सिंचन कर समाज-उत्थान का बीड़ा उठाया है,
हर क्षेत्र में, अग्रिम रहकर, अपने परचम को लहराया है।

सहनशीलता कायम रख, जग को वंदन कराया है,
गृहस्थी का दायित्व निभा, परिवार को सन्मुख पाया है ।

हाँ बिल्कुल कोमल है तू, जब-जब तुझको मान मिला है,
अस्तित्व को पहचान मिली, और तुझको सम्मान मिला है।

क्या कोमलता कायरता है ?, जो कमजोरी का नाम दिया है,
क्या मीरा की कमजोरी थी, जो उसने विष का पान किया है ?
कोमल मन, कोमल हृदय, गर लगता अभिशाप है,
बेशक इसपर अड़े रहो, पर ये कैसा संताप है ?
नये दौर के नये तरीके, तुझको भी अपनाना है,
कोई 'निर्भया' चढे ना बलि, ऐसा इतिहास रचाना है ।

ईंट का जवाब पत्थर से, देने का लोह मनवाना है,
दीप से ज्वाला बनकर, क्रांती की मशाल जलाना है ।

ईश्वर की है अनुपम कृति, ये खरी बात मनवाना है,
तुझ से ही है, जीवन की कड़ी, ये अहसास दिलवाना है ।
कोमल है, कमजोर नहीं तू, मुझको तुझ पर अभिमान है,
सौर्य उर्जा के 'तेज' सी, तू विविधता की खान है ।

सौ. रूपा अशोक चांडक
नागपुर 9422385678

कविता

कोमल है कमजोर नहीं तू

— श्रीमती रेणु गट्टानी

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।
युगों युगों से भरत भूमि ने, गाया है तेरा यशगान ।।

विद्या की तू ही है देवी, तू ही शक्ति स्वरूपा
अधिष्ठात्री बन वैभव की, लक्ष्मी रूप अनूपा
श्रद्धा से पूजन अर्चन कर, करें सभी आह्वान ।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।।

त्याग,समर्पण,सेवा में तू, जग जननी माँ सीता है
बुद्धि निपुण सावित्री बनकर, तूने यम को जीता है
सत्यवान को कर सजीव जब, करना पड़ा पूर्ण वरदान ।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।।

मीरा बनकर जब तूने, गिरधर को अपना पति माना
विष का प्याला पीने को, मजबूर किये तुझको राणा
अपनी दृढ़ श्रद्धा दिखलाई, तूने ही करके विष पान ।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।।

रानी लक्ष्मीबाई बनकर, अंग्रेजों को ललकारा
बनकर पन्नाधाय पुत्र को, स्वामिभक्ति के हित वारा
स्वीकारा कर्तव्य मार्ग पर, सदा सदा तूने बलिदान ।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।।

देख उदाहरण इस युग में भी, जरा नहीं तू हेठी है
शासन और प्रशासन के, ऊँचे ओहदों तक बैठी है
रही योग्यता, तुझे दान में, मिला नहीं कोई सम्मान ।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।।

यद्यपि अपनी कविता में कुछ, नया नहीं लिख पाई हूँ
पर बनकर के जामवंत, यह याद दिलाने आई हूँ
अगर कल्पना,प्रण ले ले तो, अंतरिक्ष की भरे उड़ान ।
कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति स्वयं की ले पहचान ।।

मंथन के मोती

सुलेखा समिति की द्वितीय राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता "कोमल है कमज़ोर नहीं तू" अत्यंत काव्यात्मक रूप में सफलतापूर्वक संपन्न हूई| सभी प्रदेशों ने पिछली बार की तरह इस बार भी जोश और उत्साह से भाग लिया और नियत समय पर प्रविष्टियां भेज कर अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया| काव्य प्रतियोगिता का विषय "कोमल है कमज़ोर नहीं तू " अपने आप में संपूर्ण भाव समेटे हूए है| सृष्टि की सृजनता जिस कोमल हृदया नारी का विशिष्ट स्वरुप है उसी का काल स्वरुप भी इसी रचना का अंग है। भारत विविधताओं का देश है जहाँ रहन सहन , जीवन शैली , सामाजिक रूप हर ४ कोस पे बदल जाता है , ऐसे में विचारों में बदलाव अपेक्षित ही है| लेकिन आश्चर्यमिश्रित सुखद बात यह है की संपूर्ण भारत से आयी सभी कविताओं का मर्म काफी कुछ एक समान था| यह समानता दर्शाती है की नारी को लेकर हमारे विचार , सोच और भावनाएं एक ही हैं| रचनाओं में नारी के सभी रूपों को अत्यंत भावुकता के साथ प्रस्तुत किया गया| कहीं उदहारण देकर और कहीं उपमाओं के साथ नारी महिमा गायी गई। सृजणात्मकता इतनी सुन्दर थी की कुछ प्रस्तुतियुओं को पढ़ के सोचना पड़ा कि यदि इन्हें पाठ्यक्रम में रखा जाये तो विद्यार्थी इसकी व्याख्या कितनी सुंदर करेंगे।

प्रत्येक प्रदेश से आयी रचनायें एक से बढ़ के एक थी, ऐसे में प्रश्न उठता है की हम कहाँ चूके। हम, सभी के प्रयासों की हृदय से प्रशंसा करते हैं लेकिन नियम से बंध कर ही निर्णय लिया जा सकता है| कुछ रचनाओं में प्रति पंक्ति शब्द सीमा का ध्यान नहीं रखा गया साथ ही यदि कविता का स्वरुप देखा जाये तो कई रचनाओ में पहली कुछ पंक्तिया ८-१० शब्दों की थी और अंत तक आते आते हर पंक्ति में करीब १५ से भी अधिक शब्द लिखे गए| इस चूक से कविता लेख लगने लगी| कई रचनाओ में क्लिष्ट भाषा के प्रयोग या फिर लय लाने की चेष्टा में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया जिसका अर्थ पंक्ति से बिलकुल मेल नहीं रखता| यधपि हमने उर्दू या आम बोल चाल के शब्दों के प्रयोगों को सराहा है| कई रचनाओ में तो विषय ही बदल दिया गया है, कविता का शीर्षक ही बदल के प्रस्तुत किया गया है| ऐसी रचनायें प्रतियोगिता में थोड़ा पीछे हो गयीं| यधपि अंक मात्र एक बहाना है आपकी प्रतिभा को और आगे बढ़ाने का, निर्णय चाहे किसी के भी पक्ष में गया हो पर सभी रचनायें संग्रह करने के लायक हैं|

पूरी सुलेखा समिति की ओर से मैं यही कह के मंथन के मोती की माला पिरो रहीं हूँ की ऐसे समय में जब हिंदी का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है हमारी बहनो ने अपनी सुन्दर प्रस्तुति दे कर एक आशा की किरण जगायी है| यदि इस प्रकार का भाषा के प्रति प्रेम हम अपने बच्चों तक पहूंचा पाएं तो हिंदी को राष्ट्र भाषा का उपेक्षित सम्मान वापस मिलते देर नहीं लगेगी| आगे आने वाली प्रतियोगिता में इसी प्रकार आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा इसी आशा के साथ|

डॉ अनुराधा जाजू
राष्ट्रीय संयोजिका (सुलेखा समिति)
हैदराबाद

सुलेखा समिति रिपोर्ट.....।।

अप्रैल माह के द्वितीय सप्ताह मे सुलेखा की राष्ट्रीय स्तर की कविता प्रतियोगिता "कोमल है कमजोर नहीं तू" आयोजित की गई। 26 प्रदेशों से 3-3 प्रविष्टियाँ आई । 30.05.17 को इस प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया।

प्रथम स्थान दक्षिणी राजस्थान की श्रीमती मधु मोदी ने प्राप्त किया ।

द्वितीय स्थान पर **विदर्भ की श्रीमती रूपा चाँडक** रहीं तो **तृतीय स्थान पूर्व मध्य प्रदेश की श्रीमती रेणु गट्टानी** को मिला।

पाँच सान्त्वना पुरस्कार क्रमशः

श्रीमती सरोजनी कालानी ,श्रीमती आशा माहेश्वरी ,श्रीमती राजश्री मोहता ,श्रीमती जमुना हेडा एवं श्रीमती मनीषा गांधी को प्रदान किए गये।

इसके अतिरिक्त 10 प्रतियोगियों ऐसे भी थे जिनकी कविताएं राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने मे सफल रहीं। उनके केवल नाम घोषित किये गये।प्रतियोगिता की सफलता मे सभी प्रदेश पदाधिकारियों एवं प्रतियोगियों का भरपूर योगदान रहा।

कई प्रदेशों ने अपने -अपने स्तर पर प्रदेश मे विजेताओं को पुरस्कृत किया ।

नियत समय से पूर्व परिणाम घोषित किये गये , जिसकी पृष्ठभूमि मे सम्पूर्ण सुलेखा समिति सदस्यों का विशेष योगदान था।

मधु मोदी

रूपा अशोक चांडक

रेणु गट्टानी